P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वर्तमान युग में राष्ट्रीय सामाजिक समस्याएँ एवं समाधान

सुनीता गौड़
असिस्टेन्ट प्रोफसर,
शिक्षा संकाय
डी. पी. बी0 एस0 पी. जी. कालेज,
अनूपशहर (बुलन्दशहर),
उ0प्र0, भारत

सारांश

चल पड़े जिधर दो डग मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर।
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गये कोटि दृष्टि उसी ओर।।

उपरोक्त पंक्तियाँ महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व पर अक्षरशः सत्य प्रतीत होते हैं। अंहिसा, सत्य एवं बह्मचर्य के आदर्शों की स्थापना करने वाला उनका दर्शन हमें कर्तव्य पालन की ओर भी उन्मुख करता है। राष्ट्रपिता गाँधीजी के समस्त कार्य विशद धार्मिक भावना व राष्ट्रीयता पर आधारित हैं।

गाँधीजी की रचनाओं में हिन्द स्वराज्य, सत्य के साथ मेरे प्रयोग इत्यादि हैं। गाँधीजी के जीवन दर्शन में निम्नलिखित बिन्दु परिलक्षित हैं–

1. ईश्वर में पूर्ण विश्वास
2. सत्य
3. अहिंसा
4. सत्याग्रह
5. आध्यात्मिक प्रकृति
6. प्रेम इत्यादि।

''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर मन व आत्मा के सर्वांगीण विकास से है।'' प्रस्तुत कथन शिक्षा के संदर्भ में गाँधी जी का है। वो शिक्षा को मात्र साक्षरता ही नहीं मानते थे।

वास्तव में अनेक समस्याओं (सामाजिक) की जड़ें हमारी भ्रान्तियाँ एवं अन्धविश्वास हैं। उचित शिक्षा व ज्ञान के प्रसार से तथा पवित्र वातारण स्थापित कर हम उपयुक्त दिशा निर्धारण कर सकते हैं। जिससे ये समस्या उत्पन्न ही न हों इसके लिये सरकारी प्रयासों के साथ ही जन सहयोग भी अपेक्षित है। आवश्यकता है सभी को साथ–साथ चलने की–

''संगच्छध्वं, संवंदध्वं संवोमनांशिं जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वे संजानानाम् समुपासते।।''

मुख्य शब्द : अन्धविश्वास, उत्थान, संस्कृति, भारतीय सभ्यता, अन्तर्राष्ट्रीय।

प्रस्तावना

भारतीय सामाजिक विचारों का आधार मनुष्य और उसकी अमर आत्मा, मानव धर्म और मानव सेवा, राष्ट्र के उत्थान की आवश्यकता, भारत और विश्व एक–दूसरे के पूरक आध्यात्म और विज्ञान तथा पूर्व और पश्चिम में समन्वय जैसे बिन्दु हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति विशेषकर हिन्दुत्व की दृष्टि से जो श्रेष्ठ तत्व है, उनका मूल्य शाश्वत है और इन मूल्यों को अपनाकर ही विश्व में भारत का स्थान सबसे ऊँचा है। दूसरे देश के लोग भी भारत के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का ज्ञान प्राप्त कर भारत से प्रेम करने लगे।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र देश है और दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। यहाँ के लोगों की संस्कृति अत्यन्त विविधतापूर्ण और समृद्ध है, किन्तु यहाँ प्रचलित सामाजिक बुराइयाँ भारतीय समाज के लिए अभिशाप बनकर रह गयी हैं। एक ऐसे समाज में जहाँ भारतीय स्त्रियाँ अन्तर्राष्ट्रीय सौन्दर्य प्रतियोगिताओं में जीत हासिल कर रही हैं। खेल प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व कर रही है। यहाँ तक कि देश की रक्षा में सेना में पुलिस विभाग आदि में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

शिक्षा के उद्देश्य

शारीरिक विकास, मानसिक विकास, चारित्रिक विकास एवं जीविकोपार्जन के उद्देश्य का विकास।

पाठ्यक्रम–आवश्यक आधारभूत आवश्यकताओं की सजगता।

1–हस्तकौशल–कताई–बुनाई, काष्ठकला, मछलीपालन, गृहविज्ञान आदि।

2–व्यावहारिक गणित–संगीत, चित्रकला, स्वास्थ्य विज्ञान, आचरण शिक्षा।

अनुशासन

गाँधीजी अनुशासन के महत्व को स्वीकार करते थे। उन्होंने आत्मप्रेरित अनुशासन का समर्थन किया है।

शिक्षण विधि

डा0 जाकिर हुसैन समिति के अनुसार–क्रिया नियोजन, यथार्थता, पहल कदमी इत्यादि।

इसके अतिरिक्त करके सीखना, भाषण व प्रश्न विधि, अनुभव द्वारा सीखना, मातृभाषा द्वारा शिक्षा की महत्ता।

शिक्षक

''गाँधीजी की दृष्टि से शिक्षक को समाज का आदर्श व्यक्ति, ज्ञान का पुंज व सत्याचरण करने वाला होना चाहिए।''

शिक्षार्थी

शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र।

महात्मा गाँधी ने पृथक रूप से किसी दर्शन का विशेष दर्शन का प्रतिपादन नहीं किया। उनके शिक्षा दर्शन में सभी दर्शनों की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है।

''गाँधी जी का शिक्षा दर्शन अपनी योजना में प्रकृतिवादी उद्देश्यों में आदर्शवादी और कार्यक्रम एवं शिक्षण विधि में प्रयोजनवादी हैं।'' (श्री एस0 पटेल)

अन्त में हम कह सकते हैं कि गाँधी जी के शिक्षा दर्शन की माला में सभी दर्शनों के मोती गुथे हुए हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. राष्ट्रीय सामाजिक समस्याओं से अवगत कराना, समाधान हेतु अभिप्रेरणा देना।
2. सुन्दर समाज की संकल्पना।
3. उपरोक्त समस्याओं के समाधान के माध्यम से वर्तमान चुनौतियों से लड़ना सिखाना।
4. देशभक्ति की भावना का विकास करना।

समाजिक समस्या का अर्थ

'सामाजिक समस्या' का अर्थ समझने के लिए हमें सर्वप्रथम 'सामाजिक' समस्या का अर्थ जानना आवश्यक है। जब भी 'सामाजिक' शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारा अभिप्राय माननीय सम्बन्धों, सामाजिक संरचना (ढाँचे), संगठन आदि से होता है। इसका अर्थ ऐसे अवांछनीय एवं अनुचित व्यवहारों अथवा प्रचलनों से है, जो समाजिक संरचना या मानवीय सम्बन्धों में जो समस्यायें उत्पन्न होती हैं, उन्हें हम सामाजिक समस्याएँ कहते हैं। सामाजिक समस्या सदैव विघटनमूलक होती हैं। इससे सामाजिक संगठन में उथल–पुथल हो सकती है तथा नियमित एंव सामान्य जीवन बुरी तरह से प्रभावित हो सकता है। सामाजिक समस्या केवल किसी विशेष स्थिति की ही सूचक नहीं होती, अपितु उस स्थिति की गम्भीरता के बारे में सामाजिक चेतना या सामाजिक चिन्ता की अभिवृत्ति को भी व्यक्त करती है उसके अर्थ को और भी स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों के विचार देना भी समीचीन होगा–

राब एवं सेल्जनिक के अनुसार

''यह मानवीय सम्बन्धों की वह समस्या है जो स्वयं समाज को गम्भीर चुनौती देती है अथवा अनेक लोगों की महत्त्वपूर्ण आकांक्षाओं में बाधा पैदा करती है।''[1]

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक समस्या सामान्य समाहित एवं प्रचलित मूल्यों के अस्तित्व में संकट एवं उथल–पुथल उत्पन्न करने वाली दशा है। अतः सामाजिक समस्याएँ सामाजिक जीवन में पैदा होने वाली अवांछनीय वो स्थितियाँ हैं जो सार्वजनिक चिन्ता का विषय होती हैं। विभिन्न विद्वानों के विचारों के अनुसार, सामाजिक समस्या के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं–

(क) समाज के अधिकांश सदस्यों से इसका सम्बन्ध होना।

(ख) दबावकारी या तनावपूर्ण सामाजिक स्थिति– बनार्ड शॉ के अनुसार स्थिति को तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है– (1) तनाव कारक, जो समाज के किसी मूल्य के लिए चुनौती का कारण होते हैं। (2) सामाजिक मूल्य, जिसको चुनौती दी जा रही है। (3) चुनौती के प्रति व्यक्तियों या समूहों की तीव्र प्रतिक्रियाएँ अर्थात् समाज के संगठन एवं कल्याण के लिए भय, आशंका की स्थिति।

(ग) समुचित सामूहिक क्रियाएँ जो समस्या को हल कर सकती है, अर्थात् सामूहिक प्रयास द्वारा इसके समाधान की आशा की जा सकती है।

समाजिक समस्या वास्तव में वे दशाएँ हैं जो सामाजिक मूल्यों को चुनौती देती हैं, समाज का महत्त्वपूर्ण भाग उनसे दबाव या तनाव महसूस करता है, वे उस दबाव के कारण को जानते हैं और यह विश्वास करते हैं कि सामूहिक प्रयासों से इस दबाव को दूर किया जा सकता है। सामाजिक समस्या, सामाजिक आदर्श और यथार्थ में भारी अन्तर की सूचक है, जिसे मिटाने के लिए सामाजिक कार्यवाही जरूरी हो जाती है। अपराध बाल–अपराध, मद्यपान, मादक–द्रव्य व्यसन, वेष्यावृत्ति, टूटते परिवार, बेरोजगारी, गरीबी, मानसिक रोग इत्यादि सामाजिक समस्याओं के ही उदाहरण हैं।

सामाजिक समस्या की उत्पत्ति

सामाजिक समस्या की उत्पत्ति अनेक कारणों से होती है, जब सामाजिक संगठन में सामंजस्य समाप्त हो जाता है और समाज द्वारा प्रचलित मूल्यों, आदर्शों व नियमों में अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो सामाजिक समस्या जन्म लेती है। जॉनसेन के अनुसार– ''जब कभी समाज द्वारा प्रचलित मूल्यों एवं आदर्शों के प्रतिकूल परिस्थितियाँ विकसित हो जाती हैं तो समस्याएँ जन्म लेने लगती हैं।''

सामाजिक समस्याओं की उत्पत्ति यद्यपि अनेक कारणों एवं परिस्थितियों के कारण होती है फिर भी प्रत्येक सामाजिक समस्या कुछ निश्चित चरणों में से गुजर कर ही विकसित होती है।

फुल्लर एवं मेयर्स ने सामाजिक समस्या के स्वाभाविक एवं प्राकृतिक विकास के चरणों की विस्तृत व्याख्या की है। उनमें से कुछ प्रमुख चरण निम्नवत् हैं–

चेतना की स्थिति

सामाजिक समस्या के विकास का प्रथम चरण समाज के व्यक्तियों में सामाजिक व्यवस्था एवं सामान्य

जीवन को अवरुद्ध करने वाली कठिनाइयों के बारे में चेतना है।

कठिनाइयों का स्पष्टीकरण

द्वितीय चरण में कठिनाईयाँ अधिक स्पष्ट हो जाती हैं और सामान्य जनता इनसे असुविधा महसूस करने लगती है और इनकी ओर स्पष्ट इशारा किया जाने लगता है।

सुधार कार्यक्रमों का निर्धारण

समस्या स्पष्ट हो जाने के पश्चात् समाधान के लिए कार्यक्रमों एवं लक्ष्यों के निर्धारण का कार्य तृतीय चरण में होता है।

संगठन का विकास

लक्ष्य निर्धारित करने के पश्चात् इन्हें पूरा करने के लिए आवश्यक लक्ष्य संगठन का विकास किया जाता है तथा आवश्यक साधनों को एकत्र किया जाता है, ताकि सुधार कार्यक्रमों को लागू किया जा सके।

सुधार प्रबन्ध

सामाजिक समस्याओं के स्वाभाविक विकास का अन्तिम चरण इसके सामाधान के लिए सुधार कार्यक्रमों को लागू करना है तथा अगर आवश्यक हो तो इसके लिए अनिवार्य संस्था का विकास करना है।

सामाजिक समस्याओं के प्रकार

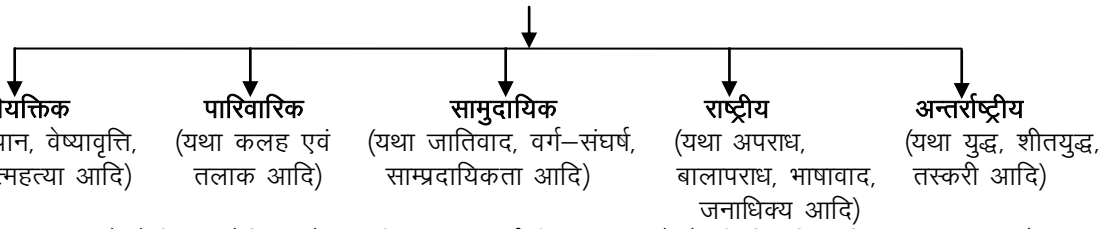

क्षेत्रीय आधार पर इन्हें क्षेत्रीय, प्रादेशिक, देशव्यापी तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में भी विभाजित किया जा सकता है–

(क) समय के आधार पर–

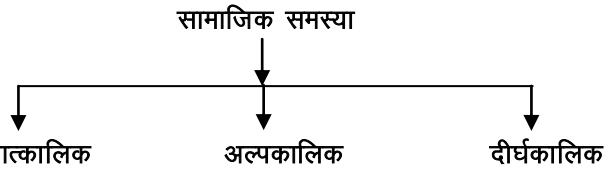

(ख) प्रकृति के आधार पर–

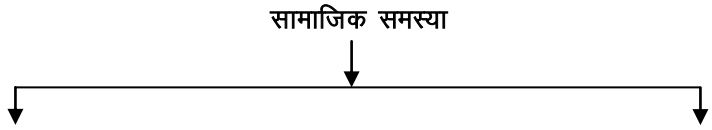

बहिर्मुखी

(जिन्हें स्पष्टतः देखा जा सकता है; जैसे– निर्धनता, पूर्वाग्रह, बेरोजगारी, अपराध आदि)

अन्तर्मुखी

(जिन्हें स्पष्टतः देखा नहीं जा सकता है; जैसे जातीय वेष्यावृत्ति, मद्यपान आदि)

सामाजिक समस्याओं के कारण

सामाजिक समस्याओं के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं है अपितु प्रत्येक समस्या के पीछे एक जटिल इतिहास रहता है। यथा– बेरोजगारी, आत्महत्या, अपराध आदि समस्याओं के पीछे एक कारण न होकर अनेक कारण होते हैं।

सामाजिक समस्याओं के कारणों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

1. राव एवं सेल्जनिक के अनुसार– ''एक सामाजिक समस्या तब पैदा होती है, जबकि एक संगठित समाज की योग्यता लोगों के सम्बन्धों को व्यवस्थित करने में असफल सी प्रतीत होती है और तब इसकी संस्थाएँ विचलित होने लगती हैं, कानून का उल्लंघन होने लगता है, मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित नहीं होते तथा आकांक्षाओं का ढाँचा लड़खड़ाने लगता है।[1]
2. सामाजिक समस्याएँ मनुष्यों के व्यवहारों जो कि अनेक प्राणिशास्त्रीय मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कारकों पर निर्भर करता है, में परिवर्तन के कारण उत्पन्न होती है। यदि व्यवहार सामाजिक मूल्यों के विरूद्ध होने लगता है तो सामाजिक समस्याएँ पैदा होने लगती हैं।
3. सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति के कारण प्रायः सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती है, क्योंकि कई बार व्यक्ति नवीन परिस्थितियों से अनुकूलन करने में असमर्थ होता है।
4. सामाजिक समस्या का प्रमुख कारण आर्थिक होता है। बेरोजगारी न केवल व्यक्तिगत समस्या है वरन् यह आर्थिक समस्या भी है।
5. पारसजन्य के अनुसार– ''मनुष्य का भौतिक साधनों के साथ अधूरा समायोजन ही मनुष्य की समस्याओं के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।''
6. वोल्फ ने जनसंख्या वृद्धि को सामाजिक समस्या का प्रमुख कारण बताया है।
7. इलियट एवं मैरिल ने सामाजिक विघटन को सामाजिक समस्याओं का प्रमुख कारण माना है।
8. आगबर्न के अनुसार– ''भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति में असमान गति के कारण उत्पन्न सांस्कृतिक

विलम्बना को सामाजिक समस्याओं का प्रमुख कारण बताया है।''

सामाजिक समस्याओं का समाधान

सामाजिक समस्याओं का प्रभावकारी समाधान निम्नलिखित है–

1. 'तनावपूर्ण समस्यात्मक' स्थितियों की पुनर्व्याख्या
2. व्यक्तियों के व्यवहारों में परिवर्तन
3. समस्याजनक व्यवहार पर वैधानिक नियन्त्रण
4. विद्वानों की सेवाओं का उपयोग
5. सामाजिक संरचना में परिवर्तन
6. समाजवादी समाज की स्थापना
7. धार्मिक शिक्षा
8. सामाजिक सेवाएँ

निष्कर्ष

वास्तव में सामाजिक समस्याओं का समाधान इतना आसान नहीं है, जितना प्रतीत होता है। यदि इतना सरल होता है तो अनेक समाज की समस्याओं से मुक्त हो जाते। अनेक समस्याओं की जड़ें हमारी भ्रान्तियाँ एवं अन्धविश्वास है। अतः उचित शिक्षा एवं ज्ञान के प्रसार से ऐसे अन्धविश्वासों को समाप्त करने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया जा सकता है तथा अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। इस सन्दर्भ में यह बात अत्यन्त उल्लेखनीय है कि समस्याओं का समाधान केवल सरकारी प्रयासों द्वारा सम्भव नहीं है वरन् इसके लिए जन सहयोग का होना भी परमावश्यक है।

निराकरण कर हर बातों का, सभी बनाएँ स्वच्छ समाज।
कीर्ति–पताका फहराएँगे, मिलकर सभी विश्व में आज।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्याएँ, डा0 धर्मवीर महाजन एवं डा0 (श्रीमती) कमलेश, 2008, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7

भारत मैं सामाजिक परिवर्तन, एम. एस. गुप्ता एवं डी. डी. शर्मा, 1987, साहित्य भवनः आगरा।

साहित्यिक निबन्ध, डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना, मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज मेरठ–25001

भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ प्रो. रमन बिहारी लाल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स गंगोत्री शिवाजी रोड मेरठ–250002 छठा संस्करण– 2010–11

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ श्री पी.डी. पाठक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, ग्यारहवाँ संस्करण 1991–921

शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग; प्रो0 रमन बिहारी लाल, आरलाल बुक डिपो मेरठ, द्वितीय संस्करण– 2006–07

उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक; एन0आर0 स्वरूप सक्सेना; डा0 शिखा चतुर्वेदी; डा0 के0पी0 पाण्डेय; आरलाल बुक डिपो; संस्करण– 2006

शिक्षा एवं भारतीय समाज; डा0 रामपाल सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

संस्कृत शिक्षण, डॉ0 के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

सृजनात्मकता, बुद्धि एवं व्यक्तित्व, डॉ. के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ लायल बुक डिपो, मेरठ।

हिन्दी शिक्षण, डॉ0 के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

पाद टिप्पणी

1. *"It is a problem in human relationaship which seriously threatens society or impeds the important aspivations of many people." (E. Raab and G.J. Selznick, major social problems, P.3.)*
2. *E. Raab and G.J. Selznick, op. Cit., P. 3*